



पढ़ना है समझना

# मिली की साइकिल



मुख्य प्रापादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यवहार अधिकारी : सैतम नान्दाली

# मिली की साइकिल



मिली की मम्मी



तोसिया



मिली



2

एक दिन मिली खेल रही थी।  
उसने कुछ बच्चों को साइकिल चलाते हुए देखा।  
मिली का मन भी साइकिल चलाने को हुआ।  
मिली ने मम्मी-पापा से एक साइकिल माँगी।



3

अगले दिन पापा ने मिली को एक साइकिल ला दी।  
साइकिल थोड़ी पुरानी थी पर अच्छी हालत में थी।  
मिली उसे देखकर बहुत खुश हुई।  
लाल रंग की साइकिल पर नीली गद्दी थी।



मिली ने मम्मी से साइकिल सिखाने के लिए कहा।  
मम्मी मिली को साइकिल चलाना सिखाने लगीं।  
वे दोनों सुबह जल्दी उठकर एक खुले मैदान में गईं।  
मिली ने साइकिल सीखना शुरू कर दिया।



5

मम्मी ने मिली को साइकिल की गद्दी पर बैठाया।  
मिली ने साइकिल का हैंडल दोनों तरफ़ से पकड़ लिया।  
मिली ने धीरे-धीरे पैडल मारे।  
मम्मी हैंडल और गद्दी से साइकिल को पकड़े रहीं।



थोड़ी देर में मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।  
मिली साइकिल के भार को सँभाल नहीं पायी।  
वह साइकिल से गिर गई।  
उसके हाथ में थोड़ी-सी चोट लग गई।



मिली थोड़ी देर तक रोई फिर साइकिल चलाने लगी।  
मिली दोबारा साइकिल पर बैठी।  
मम्मी ने साइकिल सँभाली।  
मिली धीरे-धीरे साइकिल चलाती रही।



अगले दिन दोनों फिर सुबह मैदान में पहुँच गईं।  
आज मम्मी ने साइकिल पीछे से पकड़ी।  
मिली की साइकिल चारों तरफ़ डगमगा रही थी।  
मिली ऐसे ही काफ़ी देर तक साइकिल चलाती रही।



उस दिन मिली ने शाम को भी साइकिल चलाना सीखा।  
मिली अकेले ही साइकिल को हाथ से खींचती रही।  
उसने साइकिल पर चढ़ने की काफ़ी कोशिश की।  
मिली अकेले साइकिल पर चढ़ नहीं पाई।



अगले दिन सुबह मिली की साइकिल डगमगाई नहीं।  
वह मम्मी की मदद से साइकिल पर चढ़ गई।  
मम्मी साइकिल के पीछे-पीछे चल रही थीं।  
मिली साइकिल को धीरे-धीरे चलाती रही।



थोड़ी देर बाद मिली साइकिल को दौड़ाने लगी।  
मम्मी उसके पीछे-पीछे भागीं।  
थोड़ी देर बाद मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।  
कुछ दूर जाकर मिली साइकिल से गिर गई।



मिली को साइकिल चलाना आ गया था।  
मिली साइकिल पर अपने-आप चढ़ नहीं पाती थी।  
मिली अपने-आप साइकिल से उतर भी नहीं पाती थी।  
मिली को साइकिल से चढ़ना-उतरना सीखना था।



मिली दिनभर साइकिल के बारे में सोचती रहती थी।  
उसके हाथ हैंडल की तरह चलते रहते थे।  
वह रात को भी सपने में साइकिल चलाती थी।  
सुबह होते ही साइकिल लेकर निकल पड़ती थी।



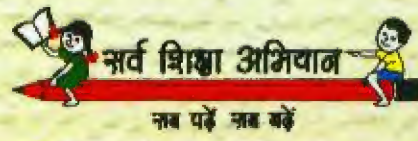
मिली सीधी-सीधी साइकिल चला लेती थी।  
उसे साइकिल से उतरने-चढ़ने में मुश्किल होती थी।  
वह साइकिल से उतरते समय गिर जाती थी।  
मिली को साइकिल ऊँची लगती थी।



साइकिल पर बैठकर मिली के पैर नीचे नहीं टिकते थे।  
मिली कई बार गिर चुकी थी।  
इसके बावजूद वह खुश रहती थी।  
उसने तोसिया को यह बात बताई।



तोसिया ने उसे एक बड़ा-सा पत्थर दिखाया।  
मिली पत्थर पर पैर रखकर साइकिल पर चढ़ गई।  
अब तो मिली के मज़े आ गए।  
दोनों स्कूल भी साइकिल से जाने लगीं।



2093



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING